

# ऋग्वेद

मण्डल १०, अनुवाक १०, सूक्त १२१ ।

अष्टक ८, अध्याय ७, वर्ग ३ - ४ ।

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Rigveda

**Maṇḍala 10, Anuvaaka 10, Sookta 121.**

**Aṣṭaka 8, Adhyaaya 7, Varga 3 - 4.**

**Translated by: Sañjay Mohan Mittal**

There are two independent systems in place for classifying the 10522 Mantras from the Ṛigveda.

The first system has the Mantras broadly classified in Maṇḍalas. Each Maṇḍala has Anuvaakas which are further divided into Sooktas. However it is noteworthy that the Sooktas are numbered independently within a Maṇḍala and their numbering do not reset at the switchover of Anuvaakas. Due to this, many scholars consider Anuvaaka to be redundant and do not use them in their translations. There are a total of 10 Maṇḍalas, 85 Anuvaakas and 1028 Sooktas in the Ṛigveda. The sizes of the Maṇḍalas vary considerably between 429 Mantras to 1976 Mantras. The sizes of the Sooktas vary from 1 Mantra to 58 Mantras.

The second system tries to evenly distribute the Mantras between 8 Aṣṭakas which are further divided into 8 Adhyaayas each. These 64 Adhyaayas are further subdivided into 2024 Vargas. The normal size of a Varga is five Mantras, however, it varies from one to twelve Mantras with either extremes being rare.

Even though the second system does not have the Sookta classification, it honors the sanctity of a Sookta. One Sookta belongs to only one Aṣṭaka and one Adhyaaya. The Mantras from a Sookta may be further grouped into multiple Vargas. The Vargas however, do not mix Mantras from different Sooktas.

Nowadays, Maṇḍala / Anuvaaka / Sookta classification is more popular and has been used in this translation as well. However, the Aṣṭaka / Adhyaaya / Varga is mentioned in the page header for reference, if needed.

### सारांश

इस सूक्त में “कस्मै देवाय हविषा विधेम” की पुनरुक्ति है। इसका तात्पर्य है कि ईश्वर की उपासना उसके गुण जानने के उपरान्त श्रद्धा पूर्वक करे, अन्धभक्ति में नहीं। यहाँ पर ईश्वर को सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता बताया गया है। वह ही सब उर्जाओं और ज्ञान का स्रोत है। ईश्वर ने ही जीवात्मा के अपवर्ग के लिए इस जगत् का निर्माण किया और उसके भरण पोषण के लिए प्रकृति को सञ्चालित करने वाले नियमों का विधान किया। वह नियम आदिकाल से बिना किसी रुकावट के सृष्टि को चला रहे हैं। वह ईश्वर ही ब्रह्माण्ड में सब ग्रहादि का आधार और उनके बीच सामजस्य का कारण है। उसके सिवा कोई और पूजा के योग्य नहीं है।

तीसरे वर्ग का आरम्भ होता है।

पहले मन्त्र में ईश्वर को जगत् का विधाता बताया गया है।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४४ अक्षराणि । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

**हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।**

**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१॥**

ऋग् १०:१०:१२१:१, यजुः १३:४, यजुः २३:१, यजुः २५:१०, अथर्व ४:१:२:७

यजुर्वेद में पाठ “समवर्तताग्रे” के स्थान पर “समवर्तताग्रे” है।

हिरण्यगर्भः इति हिरण्यगर्भः । सम् । अवर्तत । अग्रे । भूतस्य । जातः । पतिः । एकः । आसीत् ॥

सः । दाधार । पृथिवीम् । द्याम् । उत । इमाम् । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥१॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? यह (जातः) सर्वविदित है कि वह (हिरण्य) स्वर्णिम प्रकाश का (गर्भः) स्रोत, (अग्रे) सबसे पहले सभी जगह (सम्) समान रूप से (अवर्तत) विद्यमान, ईश्वर ही समस्त (भूतस्य) प्राणियों का (एकः) एकमात्र (पतिः) स्वामी (आसीत्) है। (सः) वह ही (पृथिवीम्) पृथ्वी, (द्याम्) सूर्य, चन्द्र (उत इमाम्) आदि ग्रहों को (दाधार) धारण किए हुए है। इन दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं।

दूसरे मन्त्र में ईश्वर को सभी ज्ञान और बल का स्रोत बताया गया है।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४३ अक्षराणि । निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

### Synopsis

This composition implores everyone to first identify God's qualities and then worship him with unshakeable faith, instead of blindly following what others say. Here God has been identified as the creator and the sustainer of this entire universe and everything that exists. He is the source of all of the energies and knowledge. He created this universe and all of the rules governing this universe, for the benefit of the souls. These rules have been unaltered since the beginning of the creation. He is responsible for maintaining the smooth motion of all of the heavenly bodies. He is the only one worthy of our prayers and no one else.

Here begins the third Varga.

In the first mantra the sage describes God as the sustainer of the dynamics of the universe.

**riṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 44, **chhandah** aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**1. hiraṇyagarbhaḥ samavartataagre bhootasya jaataḥ patireka aaseet, sa daadhaara prithiveen dyaamutemaan kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.**

R̥ig 10:10:121:1, Yajuh̥ 25:10, Yajuh̥ 13:4, Yajuh̥ 23:1, Atharva 4:1:2:7

In the Yajurveda the text reads "samavarttataagre" instead of "samavartataagre".

hiraṇya-garbhaḥ sam avarttata agre bhootasya jaataḥ patiḥ ekaḥ aaseet,

saḥ daadhaara prithiveem dyaam uta imaam kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful (devaaya) divinity, unto whom we should (haviṣhaa) offer our praises and prayers with (vidhema) love and devotion? It is (jaataḥ) well known that he is the (garbhaḥ) source of all (hiraṇya) light with luster like gold, (sam) equally (avarttata) present everywhere, (agre) foremost and (aaseet) has been the (ekaḥ) sole (patiḥ) lord of (bhootasya) all living beings and non-living as well. (saḥ) He (daadhaara) sustains the (prithiveem) earth (uta) and (imaam) all other (dyaam) celestial bodies in their orbits. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the second mantra the sage describes God as the source of all strength and knowledge.

**riṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 43, **chhandah** nichṛid aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।

यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

ऋग् १०:१०:१२१:२, यजुः २५:१३, अथर्व ४:१:२:१-२

यजुर्वेद में पाठ “यस्य छायाऽमृतं” के स्थान पर “यस्य च्छायाऽमृतं” है ।

यः । आत्मदा इत्यात्मदाः । बलदा इति बलदाः । यस्य । विश्वे । उपासत इत्युपासते । प्रशिषमिति प्रशिषम् । यस्य । देवाः ॥ यस्य । छाया । अमृतम् । यस्य । मृत्युः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥२॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (यः) जो (आत्म) आत्मज्ञान का (दाः) दाता है, जो शारीरिक (बल) बल का (दाः) दाता है, (यस्य) जिसकी समस्त (विश्वे) विश्व (उपासते) उपासना करता है, (देवाः) विद्वान (यस्य) जिसके (प्रशिषम्) विधान को मानकर उसका गुणगान करते हैं, (यस्य) जिसकी (छाया) शरण (अमृतम्) अमृत के समान है और (यस्य) जिसका न मानना ही (मृत्युः) मृत्यु के समान है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

तीसरे मन्त्र में ईश्वर को सभी प्राणियों व जड़ प्रकृति का स्वामी बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४४ अक्षराणि । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

ऋग् १०:१०:१२१:३, यजुः २३:३, यजुः २५:११, अथर्व ४:१:२:१-२

यः । प्राणतः । निमिषत इति निमिषतः । महित्वेति महित्वा । एकः । इत् । राजा । जगतः । बभूव ॥ यः । ईशे । अस्य । द्विपद इति द्विपदः । चतुष्पदः चतुःपद इति चतुःपदः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥३॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (यः) जो अपनी (महित्वा) महिमा के कारण (जगतः) जगत में (प्राणतः) प्राणियों व (निमिषतः) अप्राणियों का (एकः इत्) एकमात्र (राजा) राजा (बभूव) है, (यः) जो (अस्य) इन (द्वि) दो (पदः) पैर वाले, (चतुः) चार (पदः) पैर वाले और अन्य सभी जीवों का (ईशे) स्वामी है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

**2. ya aatmadaa baladaa yasya vishva upaasate prashiṣhañ yasya devaah,  
yasya chhaayaa'mṛitañ yasya mṛityuḥ kasmai devaaya haviṣhaa  
vidhema.**

Rig 10:10:121:2, Yajuh 25:13, Atharva 4:1:2:1-2

In the Yajurveda the text reads “yasya chchhaayaa'mṛitañ” instead of “yasya chhaayaa'mṛitañ”.

yaḥ aatmadaaḥ baladaaḥ yasya vishve upaasate prashiṣham yasya devaah,  
yasya chhaayaa amṛitam yasya mṛityuḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

**(kasmai) Who is that blissful (devaaya) divinity, unto whom we should (haviṣhaa) offer our praises and prayers with (vidhema) love and devotion? (yaḥ) He (daaḥ) gives us the (aatma) awareness that we are souls, and (daaḥ) provides us with (bala) mental and physical strength. Whole (vishve) universe (upaasate) worships (yasya) him, and (devaah) wise people (prashiṣham) obey (yasya) his commands. Under (yasya) his (chhaayaa) shelter flows the (amṛitam) nectar of immortal bliss, and opposing (yasya) him brings us closer to (mṛityuḥ) death. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the third mantra the sage describes God as the lord of all living beings and non-living things.

**riṣhiḥ praajaapatyo hiranyagarbhaḥ, devataa kaḥ, vowels 44, chhandah aarṣhee triṣṭup, svarah dhaivataḥ.**

**3. yaḥ praanatao nimiṣhato mahitvaika idraajaa jagato babhoova,  
ya eeshe asya dvipadash chatuṣpadaḥ  
kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.**

Rig 10:10:121:3, Yajuh 23:3, Yajuh 25:11, Atharva 4:1:2:1-2

yaḥ praanataḥ nimiṣhataḥ mahitvaa eka it raajaa jagataḥ babhoova,

yaḥ eeshe asya dvipadaḥ chatuṣpadaḥ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

**(kasmai) Who is that blissful (devaaya) divinity, unto whom we should (haviṣhaa) offer our praises and prayers with (vidhema) love and devotion? (yaḥ) He, through his (mahitvaa) glory, (babhoova) is the (eka) sole (raajaa) king of (it) this entire (praanataḥ) breathing as well as (nimiṣhataḥ) quiescent (jagataḥ) world. (yaḥ) He (eeshe) controls (asya) all (dvipadaḥ) bipeds and (chatuṣpadaḥ) quadrupeds. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

चौथे मन्त्र में पर्वत, नदी, सागर आदि को भी ईश्वर की महिमा बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४२ अक्षराणि । विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

यह मन्त्र स्वराडार्षी पङ्क्तिश्छन्द व पञ्चम स्वर में निबद्ध है, परन्तु यहाँ सूक्त के प्रवाह को बनाये रखने के लिए इसे विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्द व धैवत स्वर में निबद्ध माना गया है ।

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।

यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

ऋग् १०:१०:१२१:४, यजुः २५:१२, अथर्व ४:१:२:५

यस्य । इमे । हिमवन्त इति हिमवन्तः । महित्वेति महित्वा । यस्य । समुद्रम् । रसया । सह । आहुः ॥

यस्य । इमाः । प्रदिश इति प्रदिशः । यस्य । बाहू इति बाहू । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥४॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (इमे) यह (हिमवन्तः) बर्फ से ढके पहाड़, (रसया) जल से परिपूर्ण नदियों (सह) सहित (समुद्रम्) सागर आदि भी (यस्य) जिसकी (महित्वा) महिमा का (आहुः) बखान (को दिखाते) करते हैं, (इमाः) यह सभी (प्रदिशः) दिशाएँ (यस्य) जिसकी (बाहू) बाँहों के समान फैली हैं, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

पाँचवे मन्त्र में ईश्वर को ही सभी ग्रह नक्षत्रादि को चलायमान रखने वाला बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४३ अक्षराणि । निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

यजुर्वेद में पाठ “दृळ्हा” के स्थान पर “दृढा” है ।

ऋग् १०:१०:१२१:५, यजुः ३२:६, अथर्व ४:१:२:३

येन । द्यौः । उग्राः । पृथिवी । च । दृळ्हा । येन । स्वरिति स्वः । स्तभितम् । येन । नाकः ॥

यः । अन्तरिक्षे । रजसः । विमानः । इति । विमानः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥५॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (येन) जो (उग्राः) ज्वलंत प्रकाशमान (द्यौः) नक्षत्रों (च) और (पृथिवी) पृथ्वी को अपने पथ पर (दृळ्हा) दृढ़ रखता है, (येन) जो (स्वः) सुखस्वरूप (नाकः) निर्वाण का (स्तभितम्) कारक है, (यः) जो (अन्तरिक्षे) अन्तरिक्ष में सभी (रजसः) ग्रहों आदि

In the fourth mantra the sage describes the mountains, rivers and oceans etc. as the glorification of God.

**ṛiṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 42, **chhandah** viraaḍ aarṣhee triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

This mantra is composed in *svaraaḍ aarṣhee paṅktiḥ chhandah* and *pañchamah svarah*. However, in order to maintain the flow of the this sookta, it has been classified under *viraaḍ aarṣhee triṣṭup chhandah* and *dhaivataḥ svarah*.

**4. yasyeme himavanto mahitvaa yasya samudraṇ rasayaa sahaahuḥ,  
yasyemaah pradisho yasya baahoo kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.**

Ṛig 10:10:121:4, Yajuh 25:12, Atharva 4:1:2:5

yasya ime himavantaḥ mahitvaa yasya samudram rasayaa saha aahuḥ,  
yasya imaaḥ pradishaḥ yasya baahoo kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

**(kasmai) Who is that blissful (devaaya) divinity, unto whom we should (haviṣhaa) offer our praises and prayers with (vidhema) love and devotion? (ime) These (himavantaḥ) snowclad mountains (aahuḥ) describe (show) (yasya) whose (mahitvaa) glory, and so do the (rasayaa) rivers (saha) along with the (samudram) oceans; (imaaḥ) all (pradishaḥ) directions are spread (yasya) like his (baahoo) arms. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the fifth mantra the sage describes God as the causal force responsible for the orbital motion of all celestial bodies.

**ṛiṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 43, **chhandah** nichṛid aarṣhee triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

**5. yena dyaurugraa pṛithivee cha dṛiḷhaa yena svaḥ stabhitañ yena naakah,  
yo antarikṣhe rajaso vimaanah kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.**

Ṛig 10:10:121:5, Yajuh 32:6, Atharva 4:1:2:3

In the Yajurveda the text reads “dṛiḷhaa” instead of “dṛiḷhaa”.  
yena dyauḥ ugraah pṛithivee cha dṛiḷhaa yena svaḥ stabhitam yena naakah,  
yaḥ antarikṣhe rajasaḥ vimaanah kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

**(kasmai) Who is that blissful (devaaya) divinity, unto whom we should (haviṣhaa) offer our praises and prayers with (vidhema) love and devotion? (yena) He who has (dṛiḷhaa) steadied the (ugraah) fiercely burning, luminous (dyauḥ) celestial stars (cha) and the (pṛithivee) earth and (stabhitam) confers (svaḥ) happiness (naakah) free from all sorrow. (yaḥ) He who provides and controls the (vimaanah) motion of the (rajasaḥ) celestial bodies in the (antarikṣhe) space. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

Here ends the third Varga and the fourth Varga begins.



को (विष्मानः) चलाता है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

तीसरा वर्ग समाप्त हुआ । चौथे वर्ग का आरम्भ होता है ।

छठे मन्त्र में संसार की व्यवस्था का कारक ईश्वर को ही बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४४ अक्षराणि । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने ।

यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥

ऋग् १०:१०:१२१:६, यजुः ३२:७, अथर्व ४:१:२:३

यम् । क्रन्दसीऽइति क्रन्दसी । अवसा । तस्तभाने इति तस्तभाने । अभि । ऐक्षेताम् । मनसा । रेजमानेऽइति रेजमाने ॥

यत्र । अधि । सूरः । उदित इत्युत्ऽइतः । विभातीति विभाति । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥६॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (यम्) जिसने जगत् की (अवसा) रक्षा के लिए (क्रन्दसी) तीव्र गति से एक दूसरे की ओर लपकते हुए पृथिवी व अन्य ग्रह नक्षत्रादि के मार्गों को (तस्तभाने) व्यवस्थित किया, जिसके (अधि) नियम के अनुसार (यत्र) क्षितिज से (उदितः) उगता हुआ (सूरः) सूर्य अपने (विभाति) प्रकाश से (रेजमाने) निराश व मलीन (मनसा) मन वाले प्राणियों में (अभि) (ऐक्षेताम्) आशा का संचार करता है, दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

सातवे मन्त्र में ईश्वर को ही दिव्य शक्तियों को चेतन करने वाला बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४६ अक्षराणि । स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् ।

ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥७॥

ऋग् १०:१०:१२१:७, यजुः २७:२५, अथर्व ४:१:२:६

आपः । ह । यत् । बृहतीः । विश्वम् । आयन् । गर्भम् । दधानाः । जनयन्तीः । अग्निम् ॥

ततः । देवानाम् । सम् । अवर्तत । असुः । एकः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥७॥



In the sixth mantra the sage describes God's laws as the cause of the cosmic order.

**ṛiṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 44, **chhandah** aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**6. yañ krandasee avasaa tastabhaane abhyaikṣhetaam manasaa  
rejamaane,  
yatraadhi soora uditō vibhaati kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.**

Ṛig 10:10:121:6, Yajuh 32:7, Atharva 4:1:2:3

yam krandasee avasaa tastabhaane abhi aikṣhetaam manasaa rejamaane,

yatra adhi soorah uditah vibhaati kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

*(kasmai)* **Who is that blissful (devaaya) divinity, unto whom we should (haviṣhaa) offer our praises and prayers with (vidhema) love and devotion? He (yam) who (avasaa) for the protection of the universe has (tastabhaane) balanced the orbits of (krandasee) the earth and other celestial bodies that are lunging at each other at very high speeds; (yatra adhi) under whose laws (uditah) rising (soorah) sun (vibhaati) brings light (abhi aikṣhetaam) enabling sight and inspiring the (rejamaane) trembling (manasaa) minds. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the seventh mantra the sage declares God as the cause of awareness in the divine forces.

**ṛiṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 46, **chhandah** svaraaḍ aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**7. aapo ha yat bṛihateervishvamaayan garbhan dadhaanaa  
janayanteeragnim,  
tato devaanaan samavartataasurekaḥ kasmai devaaya haviṣhaa  
vidhema.**

Ṛig 10:10:121:7, Yajuh 27:25, Atharva 4:1:2:6

aapah ha yat bṛihateeh vishvam aayan garbham dadhaanaah janayanteeh agnim,

tatah devaanaam sam avarttata asuh ekah kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (ह) (विध्वम्) सृष्टि के आरम्भ में (गर्भम्) रचना की रूपरेखा (दधानाः) लिए, (आपः) आवेशित कणों के एक (बृहतीः) अथाह महासागर (आयन्) बना (यत्) जिससे (अग्निम्) अग्नि का (जनयन्तीः) प्रादुर्भाव हुआ । (ततः) उस समय भी (देवानाम्) सभी दिव्य शक्तियों को (असुः) चेतन करने वाला (एकः) एकमात्र ईश्वर ही (सम्) (अवर्तत) सर्वत्र विद्यमान था । दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

आठवे मन्त्र में ईश्वर को सभी दिव्य शक्तियों का स्वामी बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४४ अक्षराणि । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

यश्चिदापो' महिना पर्यपश्यदक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् ।

यो देवेष्वधि' देव एक आसीत् कस्मै' देवाय हविषा विधेम ॥८॥

ऋग् १०:१०:१२१:८, यजुः २७:२६, अथर्व ४:१:२:६

यः । चित् । आपः । महिना । पर्यपश्यदिति' परिऽअपश्यत् । दक्षम् । दधानाः । जनयन्तीः । यज्ञम् ॥

यः । देवेषु । अधि । देवः । एकः । आसीत् । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥८॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? (यः) (चित्) वह (आपः) इस आवेशित कणों के महासागर को (परिऽअपश्यत्) सभी ओर से देखता हुआ, (दक्षम्) दक्षता (दधानाः) धारण किए हुए, अपनी (महिना) महिमा से इस (यज्ञम्) जगत् का (जनयन्तीः) निर्माण करता है । (यः) वह ही (देवेषु) सभी दिव्य शक्तियों का (एकः) एकमात्र (अधि) परम् (देवः) देव (आसीत्) है । दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

नौवे मन्त्र में ईश्वर को पृथिवी, जल आदि का रचयिता बताया गया है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४४ अक्षराणि । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

मा नो' हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा ज्ञान' ।

यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्ज्ञान कस्मै' देवाय हविषा विधेम ॥९॥ ऋग् १०:१०:१२१:९, यजुः १२:१०:२

यजुर्वेद में पाठ “मा नो” के स्थान पर “मा मा”, “सत्यधर्मा ज्ञान” के स्थान पर “सत्यधर्मा व्यानट्” और “बृहतीर्ज्ञान” के स्थान पर “प्रथमो ज्ञान” है ।

(*kasmai*) **Who is that blissful (*devaaya*) divinity, unto whom we should (*haviṣhaa*) offer our praises and prayers with (*vidhema*) love and devotion? (*ha*) At the beginning of the creation (*yat*) the (*bṛihateeh*) boundless ocean of (*aapaḥ*) charged particles (*dadhaanaaḥ*) bearing (*garbham*) the blueprint for the (*vishvam*) cosmos (*aayan*) came into existence, (*janayanteeh*) for creating the (*agnim*) heat divinities; At (*tataḥ*) that time (*ekah*) He the One, (*asuḥ*) source of life for all (*devaanaam*) divinities, (*sam-avarttata*) existed. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the eighth mantra the sage describes God as the supreme divinity of all divinities.

**ṛiṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 44, **chhandaḥ** aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**8. yashchidaapo mahinaa paryapashyaddakṣhan dadhaanaa  
janayanteeryajñam,  
yo deveṣhvadhi deva eka aaseet kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.**

Rig 10:10:121:8, Yajuh 27:26, Atharva 4:1:2:6

yaḥ chit aapaḥ mahinaa pari-apashyat dakṣham dadhaanaaḥ janayanteeh yajñam,

yaḥ deveṣhu adhi devaḥ ekah aaseet kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmai*) **Who is that blissful (*devaaya*) divinity, unto whom we should (*haviṣhaa*) offer our praises and prayers with (*vidhema*) love and devotion? (*yaḥ*) (*chit*) He who (*mahinaa*) with his might (*dadhaanaaḥ*) bearing (*dakṣham*) perfection (*apashyat*) watches over (*pari*) all (*aapaḥ*) charged particles (*janayanteeh*) for creating the (*yajñam*) cosmos; (*yaḥ*) **Who (*ekah*) the only one (*aaseet*) is the (*adhi*) supreme (*devaḥ*) Lord of all (*deveṣhu*) divinities. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.****

In the ninth mantra the sage describes God as the creator of earths, waters etc.

**ṛiṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 44, **chhandaḥ** aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**9. maa no hinseejjanitaa yaḥ pṛithivyaa yo vaa divan satyadharmaa  
jajaana,  
yashchaapashchandraa bṛihateerjajaana kasmai devaaya haviṣhaa  
vidhema.**

Rig 10:10:121:9, Yajuh 12:102

In the Yajurveda the text reads “maa maa” instead of “maa no”, “satyadharmaa vyaanaṭ” instead of “satyadharmaa jajaana” and “prathamam jajaana” instead of “bṛihateerjajaana”.

मा । नः । हिंसीत् । जनिता । यः । पृथिव्याः । यः । वा । दिवम् । सत्यधर्मेति सत्यधर्मा । जजान् ॥

यः । च । अपः । चन्द्राः । बृहतीः । जजान् । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥१॥

वह (कस्मै) कौन सुखस्वरूप (देवाय) देव है जिसको हम (विधेम) विधिपूर्वक श्रद्धा सहित अपनी (हविषा) प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करें? वह (यः) जो (पृथिव्याः) पृथिवी (वा) और (दिवम्) अन्य ग्रह नक्षत्र आदि का (जनिता) रचयिता है, वह (यः) जो (सत्यधर्मा) जगत् के पालन के सारे नियमों का (जजान्) रचयिता व अधिष्ठाता है, (च) और वह (यः) जिसने (चन्द्राः) शान्तिकारक (अपः) जलों व ऊर्जाओं के (बृहतीः) विस्तृत सागरों का (जजान्) निर्माण किया, वह ईश्वर कभी भी (नः) हमें (हिंसीत्) रुष्ट होकर हानि (मा) न पहुँचाये । दिव्य गुणों वाला वह एकमात्र ईश्वर ही उपासना के योग्य है, कोई अन्य नहीं ।

दसवे मन्त्र में ईश्वर से उत्तम धन प्रदान करने के लिए प्रार्थना है ।

प्राजापत्यो हिरण्यगर्भः ऋषिः । को देवता । ४२ अक्षराणि । विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥१०॥

ऋग् १०:१०:१२१:१०, यजुः १०:२०, यजुः २३:६५, अथर्व ७:७:८०:३

प्रजापते । न । त्वत् । एतानि । अन्यः । विश्वा । जातानि । परि । ता । बभूव ॥

यत्कामाः । ते । जुहुमः । तत् । नः । अस्तु । वयम् । स्याम । पतयः । रयीणाम् ॥१०॥

हे जगत की (प्रजापते) प्रजा के स्वामी! (त्वत्) आपके (अन्यः) अतिरिक्त (एतानि) और कोई (न) नहीं जो (विश्वा) समस्त विश्व में (जातानि) उत्पन्न हुए जड चेतन (ता) आदि का (परि) सब ओर से (बभूव) पालन करे । (यत्) जिस जिस (कामाः) इच्छा को लेकर (नः) हम (ते) आपकी (जुहुमः) उपासना करते हैं (तत्) वह इच्छा पूर्ण (अस्तु) हो जिससे (वयम्) हम (रयीणाम्) उत्तम धनों के (पतयः) स्वामी (स्याम) हो जाएँ ।

चौथा वर्ग समाप्त हुआ ।

## Rigveda - Maṇḍala 10 Anuvaaka 10 Sookta 121; Aṣṭaka 8 Adhyaaya 7 Varga 3 - 4

maa naḥ hinseet janitaa yaḥ prithivyaah yaḥ vaa divam satya-dharmaa jajaana,  
yaḥ cha apaḥ chandraah bṛihateeh jajaana kasmai devaaya haviṣhaa vidhema.

(*kasmāi*) **Who is that blissful (*devaaya*) divinity, unto whom we should (*haviṣhaa*) offer our praises and prayers with (*vidhema*) love and devotion? (*yaḥ*) He who is (*janitaaḥ*) the creator of (*prithivyaah*) the earth (*vaa*) and (*yaḥ*) who (*jajaana*) created (*divam*) the celestial bodies; and who is the (*satya-dharmaa*) master, controller and ordainer of all operational laws of existence; (*cha*) and (*yaḥ*) he who (*jajaana*) created (*chandraah*) blissful (*bṛihateeh*) vast (*apaḥ*) oceans of energies and waters; may he (*maa*) never (*hinseet*) be angry and hurt (*naḥ*) us. God, the possessor of these divine qualities, is the only one truly worthy of our worship.**

In the tenth mantra the sage offers a prayer to bless us with righteous wealths.

**riṣhiḥ** praajaapatyo hiraṇyagarbhaḥ, **devataa** kaḥ, **vowels** 42, **chhandah** viraaḍ aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**10. prajaapate na tvadetaanyanyo vishvaa jaataani pari taa babhoova,  
yat kaamaaste juhumastanno astu vayan syaama patayo rayeeṇaam.**

Rig 10:10:121:10, Yajuh 10:20, Yajuh 23:65, Atharva 7:7:80:3

prajaapate na tvat etaani anyah vishvaa jaataani pari taa babhoova,  
yat kaamaah te juhumah tat nah astu vayam syaama patayah rayeeṇaam.

(*prajaa-pate*) **O Prajapati! O Master of this entire creation! (*na etaani*) No-one, (*anyah*) except (*tvat*) you, (*babhoova*) can (*pari taa*) control the (*jaataani*) creatures of this visible, and other invisible (*vishvaa*) worlds. May (*yat*) those (*kaamaah*) righteous desires, for (*tat*) which (*nah*) we (*juhumah*) worship (*te*) you, be (*astu*) attained. May (*vayam*) we (*syaama*) be (*patayah*) masters of (*rayeeṇaam*) earthly and heavenly riches.**

Here ends the fourth Varga.